अस्मिता सिंह

न्यू जर्सी

पहचान

मैं आज़ाद हूँ।
एक विश्व नागरिक में बदलते हुए भी ।

मैं हर दिन ढूँढ़ती हूँ,
अपनी स्वतंत्रता
कभी समाज के बंधन में,
कभी स्वदेशी असमंजस में
कभी अपने ही दिमाग के अंतर्द्वन्द्व में।

मैं नारी हूँ:
स्वतंत्र, सक्षम, कामकाजी और
आत्मनिर्भर
अनेक लोगों के लिए प्रेरणास्रोत
फिर भी रोज़मर्रा के विचारों में
खोजती हूँ
अपनी ही पहचान
पराधीनता के वातावरण में ।

स्वदेश में
मेरी पहचान थी
एक अच्छी विद्यार्थी की
पूरी तरह शिक्षा पर केन्द्रित,
एक अच्छी बेटी
अच्छी बहन
अच्छी बहू और
एक अच्छे मित्र की तरह ।

विदेश में?
इतनी मेहनत करके भी
मैं कैसे अनदेखी रह जाती हूँ
मिलनसार होने के बावजूद
हर दृश्य में
हर कोने में।

मेरी आवाज, मेरी शिक्षा
मेरा व्यक्तित्व
अचानक इतना कम क्यों लगने लगता है
जबकि मैं वही हूँ
समाज वही है
बस नज़रिया क्यों बदल जाता है।
लोग देखते ही नहीं।
बोल दो तो,
अहंकार का तमगा लग जाता है
"you are too bossy."

और मैं सीख जाती हूँ
मत और सम्मत के विचार को
प्रश्न में बदलना ।
फिर भी
रोज़ थोड़ी सी जगह छोड़ देती हूँ
किसी और के comfort के लिए।
इतनी छोटी चीज़ें
कि किसी को दीखती भी नहीं।
बस मुझे पता है
दूसरों की नज़र से
खुद को देखते हुए
दूसरों को खुश करते हुए
मैं कितनी सिमट गई हूँ।

जहाँ विविधता, समानता और
समावेशन पर
इतना केन्द्रित था,
अब वही पीछे जा रहा है।
और सच कहूँ, मुझे नहीं लगता
कि ये प्रयास और पहल
हमारे लिए जगह बनाएँगे।
जगह माँगनी पड़ेगी।
आवाज़ उठानी पड़ेगी।
अपने लिए, और सबके लिए।

दोहरी भूमिका निभाते हुए
नारी को हर जगह
करनी पड़ती है
मेहनत, और मेहनत, और फिर भी
मेहनत।
अनेक लोग भावी वायदों के आधार पर
पा जाते हैं स्थान
रोजगार की मंडी में
लेकिन
हमें पहले सिद्ध करना पड़ता है।
और चेहरे पर एक भारतीय होना
इसमें कोई मदद नहीं करता।

तो हाँ, अब आओ
उत्सव का उत्साह न होने पर भी
स्वतंत्रता का जश्न मनाएँ
पर हमारी आज़ादी
औरत की आज़ादी
अभी दूर है।
वो आज़ादी।
स्वयं से स्वयं की आज़ादी।